गीता प्रेरणा महोत्सव के अवसर पर भाषण

----

01 दिसम्बर, 2019

लाल किला मैदान, नई दिल्ली

आज यहां गीता प्रेरणा महोत्सव के पावन अवसर पर आप सबके बीच उपस्थित होकर मैं गौरव का अनुभव कर रहा हूँ। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि परम पूज्य स्वामी श्री ज्ञानानंद जी महाराज के महा अभियान "जीओ गीता (जीआईईओ)" का मुख्य उद्देश्य यही है कि समर्थ, संस्कारित, गीतामय भारत का निर्माण हो। इसी पुनीत उद्देश्य को ध्यान में रखकर दूर - दूर से विभिन्न क्षेत्रों से जुडे प्रतिष्ठित अतिथिगण यहां पधारे हैं।

यह महोत्सव भगवद् गीता के सभी 18 अध्यायों पर संवाद करने के लिए आयोजित किया गया है। मुझे बताया गया है कि कार्यक्रम की रूपरेखा इस प्रकार तैयार की गई है कि इसमें देश के विभिन्न भागों से 18 हजार युवा, 1800 नौकरशाह, 1800 व्यापारी, 1800 डॉक्टर और 1800 वकील शामिल होंगे ।

स्वामी जी ने उचित ही कहा है कि गीता का प्रत्येक अध्याय महत्वपूर्ण है और प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने कार्यक्षेत्र में जीवन जीने की बहुमूल्य कला सिखाता है ।

यह जानकर खुशी हुई है कि 'गीता प्रेरणा महोत्सव' का उद्देश्य युवाओं को गीता के ज्ञान से परिचित कराना और हमारे समाज के मतभेदों और पूर्वग्रहों को दूर करते हुए एक समरस समाज का निर्माण करना है। यह भी सराहनीय बात है कि जीआईईओ गीता इस आयोजन के माध्यम से यह सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रयास कर रही है कि युवा पीढ़ी चरित्रवान बने, नैतिकतापूर्ण आचरण करे और समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को समझे ।

मेरी व्यक्तिगत राय है कि गीता अन्य धर्मग्रंथों की भांति जीवन के उत्तरार्ध में पढे जाने वाला ग्रंथ नहीं है। जिस आयु में हम सबसे अधिक क्रियाशील होते हैं, जब हमारे जीवन में ऊर्जा की प्रचुरता रहती है तब यदि हम गीता के सम्पर्क में आएं, उसमें निहित कर्मयोग के मर्म को समझें, जानें, तब वह हमारे लिए सर्वाधिक हितकारी मार्गदर्शिका बनेगी। युवा पीढी की यहां पर उपस्थिति मुझे काफी आश्वस्त कर रही है। उनके युवा मानस पर गीता का सकारात्मक प्रभाव शुभ संकेत है।

श्रीमद्भगवत गीता हमारे सनातन धर्म के महान ग्रंथ महाभारत में ज्ञान कोष की भांति संचित है। जीवन जीने की कला तथा नर से नारायण बनने का मार्गदर्शन इस अद्भुत पुस्तक में विद्यमान है।

साथियो, गीता एक कालजयी रचना है। यह समय की परिधि से परे है। युद्ध के मैदान में भी गीता का उपदेश भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को उस समय दिया था जब अर्जुन के भीतर और बाहर दोनों तरफ संघर्ष चल रहा था। इस उपदेश की उपयोगिता तब भी थी, आज भी है और आगे भी हमेशा बनी रहेगी।

गीता वास्तव में मानव मन को भटकावों से हटाकर सही राह पर चलाने की सबसे कीमती चाबी है। हम आज की ज्वलंत समस्याओं का समाधान भी गीता में आसानी से ढूंढ सकते हैं। चाहे वो मानवीय मूल्यों का पतन हो, सांप्रदायिकता या जात –पात हो, सबके निदान के लिए हमें कहीं और नहीं बल्कि गीता की ओर जाने की आवश्यकता है।

साथियो, हर व्यक्ति के लिए गीता के अपने मायने हैं। यहां गीता की शास्त्रीय व्याख्या करने वाले विद्वान मनीषी भी उपस्थित हैं जो उसके धार्मिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक विशेषताओं और गूढ़ तत्वों की व्याख्या करेंगे।

श्रीमदभगवत गीता को लेकर जो मेरे मन में भाव हैं और अपना निजी अनुभव है, वो मैं आपके साथ साझा करना चाहता हूँ। मेरी मां एक अत्यन्त धार्मिक महिला थीं। वह धार्मिक पुस्तकों को बहुत सहेज कर ससम्मान रखती थीं। रामायण और महाभारत की कथाएं बचपन में ही हमें सुना दी गई थीं।

ऐसे ही महाभारत के हिस्से के रूप में श्रीमद्भगवत गीता से मेरा परिचय हुआ। बाद में जैसे – जैसे इस महान कृति को जानने – समझने की दृष्टि व्यापक हुई तो इस पुस्तक का महत्व और निखरकर सामने आ गया।

महात्मा गांधी श्रीमद्भगवत गीता को गीता माता कहते थे। उनके जीवन में जब भी कोई संकट आता था, कोई चुनौती आती थी, तो वह उसका हल भगवतगीता में ही तलाशते थे। वह मानते थे कि जो मनुष्य श्रीमद्भगवत गीता का भक्त होता है, उसे निराशा कभी नहीं घेरती, वह हमेशा आनंद में रहता है।

आखिर यह आनंद आता कहां से है? जब इस प्रश्न की विवेचना करते हैं तो हमें इस महान पुस्तक के प्रथम अध्याय को देखना होगा जिसका नाम 'अर्जुन विषाद योग' है। समय कोई भी रहा हो, हम सब अर्जुन हैं। हम सबके समक्ष परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। संशय जगते हैं, प्रश्न उठते हैं कि क्या किया जाए? क्या किया जाना चाहिए? ऐसे प्रश्न हमें दुविधा में डालते हैं। हमारी बुद्धि और विवेक को 'कठिन परीक्षा' से गुजरना पड़ता है।

इस प्रकार एक कुरुक्षेत्र हम सबके मन – मस्तिष्क में चलता रहता है। यही कुरुक्षेत्र है और धर्म क्षेत्र भी है। इस क्षेत्र में कुछ न कुछ लड़ाइयां चलती ही रहती हैं। अधिकांश लड़ाइयां 'मेरे - तेरे' को लेकर ही होती हैं। ये अपने - पराये के भेदभाव से पैदा होती हैं।

मैं इसे स्वयं से भी जोड़कर देखता हूँ कि 17वीं लोक सभा में मुझे नवनिर्वाचित संसद सदस्यों ने सर्वसम्मति से लोक सभा अध्यक्ष के पद पर कार्य करने के लिए चुना। इतनी बड़ी जिम्मेदारी को निभाने के लिए भगवद्गीता ही प्रेरणा बनती है। गीता ही मेरा मार्गदर्शन करती है। मैं एक ऐसे संवैधानिक पद की जिम्मेदारी निभा रहा हूँ जहाँ मेरी दृष्टि में सभी समान हैं। कोई मेरा अपना नहीं है और कोई पराया नहीं है। मेरी नजर में कोई पक्ष या विपक्ष नहीं है, सब एकसमान हैं।

श्रीमद्भगवदगीता मुझे सिखाती है कि यदि किसी को अपना मानने लगेंगे तो राग पैदा होगा और किसी को पराया समझेंगे तो द्वेष भाव आ जाएगा। इसलिए 'मेरे – तेरे' का भेद भुलाकर राग - द्वेष त्यागना चाहिए।

विचार करके देखें तो हम सब अपने - अपने जीवन संग्राम के योद्धा हैं। जब हम मोहग्रस्त होते हैं तो यह ग्रंथ हमारे धैर्य को टूटने से बचाता है, एक साहस भरता है, हृदय की दुर्बलता को छोड़ने का आह्वान करता है।

गीता अनुपम आत्मविश्वास जागृत करके हमें निर्भय बनाती है। मैं केवल देह नहीं हूं। देह तो आवरण मात्र है। जब इस ज्ञान से आत्मा की अमरता का बोध होता है तो व्यक्ति बड़े से बड़ा कार्य निर्भय होकर करता है।

हमने देखा है कि हमारे देश के क्रांतिकारी, बलिदानी वीर इसी प्रेरणा से फांसी के फंदे को चूमते रहे। अत्याचारी अंग्रेजी शासन लाख चाहकर भी उनके चेहरों की मुस्कान को नहीं मिटा सका। उनके बलिदानों से ही हमें आजादी मिली।

आजादी मिलने के बाद पूरे देश में एक चुनौतीपूर्ण वातावरण था। ऐसे में आम जन की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए तथा एक नए भारत के निर्माण के लिए स्वयं देशवासियों ने ही अपने संविधान का निर्माण करके भारत को एक गणतंत्र के रूप में स्थापित किया।

हमारा यह संविधान दरअसल हमारे पूर्वजों के ही स्थापित मूल्यों का एक दर्शन है। इस संविधान का श्रीमद्भगवदगीता से भी अंतर संबंध है। वह मैं आपको आज बताना चाहूंगा।

यदि आप भारत के मूल संविधान को देखें, जो हस्तलिखित था। उसके प्रत्येक भाग के आरंभ में हमारी सभ्यता, संस्कृति और हमारे प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक गौरव को उकेरने वाले चित्र अंकित हैं।

हमारे संविधान के भाग 4 में राज्य के नीति निदेशक तत्वों का वर्णन है जिसमें मूल कर्त्तव्यों का वर्णन है। नीति निदेशक तत्वों वाले इसी भाग के आरंभ में ही गीता ज्ञान का चित्र अंकित है। इतने महत्वपूर्ण भाग में गीता उपदेश के चित्र के व्यापक मायने हैं और यह एक संदेश लिए हुए है। हम अपने कर्त्तव्यपालन से विमुख नहीं हो सकते। हमें निरंतर कर्म करते रहना है। गीता के उपदेशों को स्मरण रखते हुए ही हम संविधान निर्माताओं के सपनों के भारत को एक सच्चाई में बदल सकते हैं।

साथियो, आप सब यहां तत्वज्ञानियों की बातें सुनेंगे। मैंने आपके साथ अपने व्यावहारिक जीवन में गीता से हुए साक्षात्कार और उसके लाभ का वर्णन किया है।

अंत में मैं एक बार पुन: महात्मा गांधी जी को उद्धृत करना चाहूंगा जिन्होंने कहा था कि "गीता हमारी सद्गुरू रूप है, माता रूप है और हमें विश्वास रखना चाहिए कि उसकी गोद में सिर रखकर हम सही सलामत पार हो जाएंगे।"

मेरे लिए यह सौभाग्य का विषय रहा है कि मैं ऐसे महोत्सव में शामिल हो पाया। गीता प्रेरणा महोत्सव दरअसल एक ज्ञान यज्ञ की तरह है और मुझे इस ज्ञान यज्ञ में शामिल होकर आत्मिक संतुष्टि हो रही है।

जिस उद्देश्य से यह महोत्सव आयोजित हो रहा है, उस 'समरस, संस्कारित गीतामय भारत' का उद्देश्य यथाशीघ्र प्राप्त हो, ऐसी मेरी शुभकामना और सदिच्छा है। जन – जन तक गीता का पुनीत उपदेश पहुंचे। लोग अपने कर्त्तव्यों की ओर उन्मुख हों। उन्हें उनके कर्त्तव्य पथ से कोई भी संशय डिगा न पाए। और यदि कभी कोई संशय उन्हें घेरे, तो फिर एक ही उपाय उनके सामने है। वे लौटकर गीता की शरण में आएं जो सीधे कर्मयोगी प्रभु श्रीकृष्ण के मुख से निकली है।

क्योंकि कहा भी गया है कि "गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यै शास्त्र विस्तरै ।" अर्थात् केवल गीता का ही पालन कर लें तो अन्य शास्त्रों के विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है।

.....